दूसरा अध्याय

भौगोलिक ऐतिहासिक तथा पृष्ठभूमि

सामान्य परिचय

हिमाल उपदेश भारतवर्ष का एक सुन्दर प्रान्त है और भारतवर्ष के उत्तरी राज्यों में इस का सांस्कृतिक एवं भौगोलिक मूल्य से अपना एक विशेष महत्त्व है। "15 अप्रैल 1948 को 31 पहाड़ी रियासतों के विलय के पश्चात हिमाल उपदेश अस्तित्व में आया। उस समय इस का क्षेत्रफल 10600 वर्गमील तथा जनसंख्या 9,35,000 थी। अंग्रेजी काल में ये रियासतें पंजाब हिल स्टेट्स तथा शिमला हिल स्टेट्स से बदी थी।" 1

शिमला हिल स्टेट्स के नाम से पुकारे जाने वाली ठाकुराईयों और रियासतों को सामूहिक रूप से 'महासू' जिला बनाया गया। "सितम्बर, 1972 में हिमाल सरकार द्वारा जब पुनः जिलों का वर्गीकरण किया गया तो महासू और शिमला जिलों में से वर्तमान शिमला जिला बना।" 2

हिमाल अनेक ऋषि महार्षियों की तपोभूमि रहा है जैसे वेद-व्यास, जमातिन परशुराम इत्यादि। यही कारण है कि हिमाल को देवभूमि के नाम से जाना जाता है। 'महासू' (शिमला) इसी देवभूमि का एक अभिन्न अंग है। बाणासुर और श्रीकृष्ण का युद्ध भी इसी भूमि पर हुआ था। शिमला जनपद में स्थित श्री विष्णु पर्वत आज भी विद्यमान है। जिस पर भगवती

1 डॉ॰ गोतम ग्राम स्वर्गीय, हिमाल उपदेश तथा जनजाति संबंध, पृ. 146
2 डॉ॰ श्री. एल. वर्मा, हिमाल इतिहास और परम्परा, पृ. 146
पार्वती निवास करती थी। उक्त कथन से यह सिद्ध होता है कि शिमला का पर्वतीय क्षेत्र भगवान शंकर की क्रिस्मात्तली रही है।

नामकरण -

हिमाचल प्रदेश शिव और शक्ति का मूल स्थान माना गया है क्योंकि पौराणिक गाथाओं के अनुसार हिमालय पार्वती अथवा शक्ति के पिता है। शिमला जनपद हिमाचल प्रदेश के मध्य में पड़ता है, जिसे भीमापीठ भी कहा जाता है। इस जनपद के शीर्षस्थ स्थान सराहन, रामपुर, तहसील में भी भीमाकाली का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर विश्वमान है। उस के नाम पर भले ही शिमला जनपद का नाम नहीं रखा गया अपितु शिमला में भीमाकाली के सटूश स्थित माता श्यामला को अधिमान देकर इस जनपद का नाम शिमला रखा गया।

“शिमला नगर शक्ति के महाबिन्दु का एक पारिष्ठ स्वरूप है क्योंकि पूर्व में दिन्गू देवी, पश्चिम में कामना देवी और दक्षिण में तारादेवी इन तीनों को मिलाने पर त्रिकॉण बनता है जो त्रियुगान्तम प्रकृति का वास्तविक सत्ता-रज-तम रूप है।”

1 बिन्दु त्रिकॉण चुनौतीय गणितम कूल्या कर्मकारण प्रकीषण, पृ० 52 - 11
इन तीनों के बीच में श्यामला काली विद्यमान है। इस देवी को आधार मान कर जैसे शूलनी से सोलन, कालिका से कालका, चण्डी से चण्डीगढ़ नाम प्रसिद्ध हुए उसी प्रकार से श्यामला या श्यामा से ’शिमला’ शब्द अपभ्रंश हो कर बना है।

“एक किवदार्नि के अनुसार आजकल जहां पर काली बाड़ी का विशाल भवन तथा मन्दिर स्थित है पहले वहां महाशक्ति श्यामा देवी के काले पत्थरों से बना एक छोटा सा मन्दिर था उस में एक पहुंचा हुआ साधु रहता था। उस काल में इस देवी की बहुत मान्यता थी बहुत से अंग्रेज अफसरों को देवी के चमत्कार देखने को मिले जितना वर्णन उन्होंने अपनी किताबों में किया। इसी महा शक्ति श्यामला देवी के कारण शिमला गांव का नाम श्यामला लिया जाता था। जो बाद में धीरे-धीरे बिगड़ते बिगड़ते शिमला पुकारा जाना लगा।”

“शिमला अंग्रेजों की युग से ही यत्र-तत्त बिकेरो भोड़े से भू-रवण की कोन्भ-स्थली थी। 1948 में हिमाचल प्रदेश का गठन हुआ था। उस समय रामपुर बुरहार की रियासत तथा शिमला रवण की विभिन्न ठंडुराईयों के मिलने से महात्म जिले का निर्माण हुआ था। सितम्बर 1972 में हिमाचल सरकार ने पुनः जिले का वर्गीकरण किया जिस के अनुसार महात्मा और शिमला जिलों में से वर्तमान शिमला और सोलन जिले बने तथा जिले को रूप में महात्मा शब्द इतिहास को गर्भ में समा गया।”

1 हिम भारती, भाषा एवं सम्बन्धित विधाय, सितम्बर, 1973
2 डॉ॰ बी॰ एन॰ कपूर, हिमाचल इतिहास और परम्परा, 70 स० 144-146
शिमला जिले में भूतपूर्व समस्त शिमला सब-डिवीजन के अतिरिक्त रामपुर, रोहडू, जुब्ल ठियोग तथा चौपाल की तहसीलें भी शिमला में मिलाई गई है। सुन्नी, कोटक्वाई और कुमारसेन की सब-तहसीलें भी इसी में शामिल की गईं।

वर्तमान शिमला जनपद में 7 उपमण्डल 12 तहसीलें व 5 उपतहसीलें है। इन का विवरण इस प्रकार है:—

<table>
<thead>
<tr>
<th>उपमण्डल</th>
<th>तहसीलें</th>
<th>उपतहसीलें</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. शिमला शहरी</td>
<td>शिमला शहरी</td>
<td>टिक्कर</td>
</tr>
<tr>
<td>2. शिमला शहरी</td>
<td>शिमला शहरी</td>
<td>जुन्गा</td>
</tr>
<tr>
<td>3. ठियोग</td>
<td>ठियोग</td>
<td>कुपवी</td>
</tr>
<tr>
<td>4. चौपाल</td>
<td>चौपाल</td>
<td>नेरवा</td>
</tr>
<tr>
<td>5. रामपुर बुशहर</td>
<td>रामपुर</td>
<td>चढ़गांव</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>कुमारसेन</td>
</tr>
<tr>
<td>6. रोहडू</td>
<td>रोहडू</td>
<td>कोटक्वाई</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>जुब्ल</td>
</tr>
<tr>
<td>7. ढोड़ा कवार</td>
<td>ढोड़ा कवार</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
जनसंख्या और क्षेत्रफल—

“नवीनतम परिगणना वर्ष 2001 के अनुसार शिमला जनपद की कुल जनसंख्या 7,21,745 तथा क्षेत्रफल 5131 वर्ग हेक्टर है।” 1 55658 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले हिमाचल को यदि देवभूमि से अलग चूक दिया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सीमा—विस्तार—

भौगोलिक दृष्टि से शिमला जिला 70°–0” से 78°–19” पूर्वी रेखांश तथा 30°–45” से 31°–44” उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। हिमाचल प्रदेश के मानचित्र में दक्षिण दिशा में स्थित यह जिला अपने पूर्व की ओर किन्नौर पश्चिम की ओर सोलन उत्तर की ओर मण्डी और कुल्लू तथा दक्षिण में सिरमौर जिला तथा उत्तर प्रदेश की सीमाओं से घिरा हुआ है।

संस्कृति—

इस क्षेत्र के लोग सरल नेहनती मितब्योग और ईमानदार है। व्यवहार में स्वदेश, निमित्तसार, और सर्वथा विश्वास पात्र है। सत्य पर दूष रहना यहां के लोगों का विशेष गुण है। सत्तर प्रतिशत से अधिक लोग अपने धर्म विश्वास तथा परम्परा से वंधे देवी देवताओं में पूर्ण आस्था रखे सुलभ जीवन विताते है। जीवन की प्रत्येक प्रक्रिया सफलता—असफलता, सुख दुःख, जीवन भूत्य, सभी कुछ देवता की प्रसन्नता, अप्रसन्नता का प्रतिफल समझ जाता है। अतः दुःख तथा भय की स्थिति में देवता की शरण में जाकर अपराध अथवा भूल की क्षमा मांगते हुए सुरक्षा एवं मीठा पाने का वरदान पाने की चाह इन के स्वभाव का विशेष गुण है।

देवताओं में अंधविश्वास का कारण इन्हें यह सदैव महसूस होता है कि ईश्वर उन के अच्छे बुरे कमों का लेखा जोखा रखता है जिस पर उनका अगला जन्म निश्चित होता है।

सामाजिक और आर्थिक दांव–

यहां के अधिकांश लोग स्वतंत्र मजदूर हैं और गाँवों में बसे हैं अतः हिमाचल के गांव ही यहां की सामाजिक आर्थिक दांवो की परत्व पहचान के आधार है। लोगों में सहयोग की प्रौृति मिलती है। कृषि और कठिन कायां को मिल जुल कर करते है।

गांवों में सामान्य व्यवस्था बनाये रखने हेतु खासता पद्धति का चलन है विकास संबंधी कार्य भी यही करती है। भूमि से लोगों को विशेष मोह है। गांव को भीतर अथवा बाहर बंजर पड़ी भूमि को ‘श्यामलाल’ कहते हैं जिस पर समूहों गांव का अधिकार होता है। इसे गांव वालों को उभ चरते हैं।

गांव के लोग बिरादरी को ज़ड़ा महत्त्व देते है। विवाह आदि संबंध स्थापना से जाति गोत्र तथा सामाजिक प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखा जाता है। गांवों में अधिकार कार्य आपस के सहयोग से किये जाते हैं। जिस से अमीर-गरीब सभी के कार्य समय पर तथा निश्चित हो जाते है।

संयुक्त परिवार प्रश्न का अधिक महत्व है। रहने के लिए घरों का निर्माण अधिकार मिट्टी व लकड़ी से किया जाता है। लेकिन आधुनिक समय परिवर्तन के कारण सीमेंट के पक्षे मकानों का प्रयोग कर रहे हैं। मकान के समूह ही पशुशाला का निर्माण किया जाता
है। यहां के लोगों के जीवन निवास का मुख्य साधन कृषि व बागवानी है। आधुनिक समय में जहां एक ओर शिक्षा के प्रसार के साथ समाज में नई चेतना का प्राप्ति हुआ है। वहीं दूसरी ओर यातायात के पर्यावरण साधन होने के फलस्वरूप नकदी फसलों को मणिद्वंत्रों में पहुँचाने की व्यवस्था से किसानों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी हुई है। इस प्रकार शिमला क्षेत्र का जन-जीवन एवं सामाजिक व्यवस्था अत्यन्त सामान्य है। शिमला क्षेत्र के लोग भोले-भाले सादगी से समृद्ध व समयानुसार पराक्रमी है क्योंकि यहां पर अनेकों स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं। जिन के अथक प्रयत्नों व पराक्रम से स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

भाषा-

जिला शिमला में बोली जाने वाली भाषा वैसे तो पहाड़ी है। परन्तु क्षेत्र के अनुसार इस पहाड़ी भाषा में भी थोड़ा-बहुत अन्तर पाया जाता है। ऊपरी शिमला की तथा निचले शिमला की भाषा में काफी अन्तर पाया जाता है। परन्तु यह भाषा प्रायः यहां के लोग समझ लेते हैं। यहां की कार्य भाषा हिंदी है।

पहाड़ी भाषा की उत्पत्ति के विषय में अनेक मत पाये जाते हैं। एक तो यह कि पहाड़ी बोली की मुख्य जननी सस्तुत और प्राकृत भाषा है, उसी पहाड़ी भाषा की मुख्य भाषा महातुली है।

"कबीर की उस उक्ति को अनुसार--

घाट-घाट में बदले पानी।

चार कोस में वाणी।"।

1. हिंद भारती, नवंबर, 1972, पृ 31
भाषा भी चार कोस में बदल जाती है। शिमला क्षेत्र की बोलियों की एक विशेषता यह है कि बोलने के लहजे में भी अन्तर प्रतीत होता है, जब कि शब्दावली लगभग मिलती जुलती होती है।

जलवायु—

भौगोलिक दृष्टि से विचित्र होने के कारण शिमला जनपद की जलवायु अत्याधिक स्थानों पर सदी में अधिक सर्द तथा गर्मियों में अधिक गर्म रहती है। इस जिले का अधिकतर भाग जंगलों से आच्छादित है। कहीं-कहीं निरन्तर सूखी पहाड़ियों व चट्टानों का भी प्रभाव है।

शुष्क क्षेत्र के वृक्षों में चिलगोजा, कौल और काटिदार वन ज्यादा है। नमी वाले क्षेत्रों में देवदार से अधिक कौल होता है। निचली ऊंचाईयों में चील के जंगल ज्यादा है। इस जिले की प्रमुख नदी सतलुज है जो कि आगे चल कर व्यास में मिल जाती है। इस के अतिरिक्त दो अन्य छोटी नदियां पाबंद और गिरी है। ये दोनों नदियां ‘टोन्स यमुना’ में गिरती है। इस के अलावा अन्य छोटी-छोटी नदियां भी है जो इन बड़ी नदियों में जा कर मिलती है। इन सब नदियों में सारा वर्ष पानी बहता रहता है।

रीति रिवाज—

शिमला क्षेत्र के प्राचीन रीति रिवाजों का अभी तक पालन किया जाता है प्रायः जन्म से लेकर मृत्यु तक शास्त्रों के अनुसार ही कार्य किया जाता है। बच्चे का जन्म, शादी, विवाह,
तथा मृत्यु जैसे अवसरों पर अलग-अलग ढंग से संस्कार किए जाते हैं। विवाह में लड़का बारात लेकर लड़की के पर जा कर अभिन के फेरे लगा कर उसे अपने पर लाता है। गृह प्रवेश से पहले वह अपने गांव के देवता की पूजा करते हैं।

बारात में शहनाई, करनाल, दोल, नगरा, रणसिम्मा आदि पारंपरिक लोक वादों का वादन किया जाता है। यहां के लोग देवी-देवताओं पर विश्वास करते हैं, कुछ अंधविश्वासी होते हैं। जो जातू – टोने तथा पशु बलि पर विश्वास रखते हैं। कई विशेष अवसरों पर तो सैकड़ों की संख्या में भैंड बकरी की बलि दी जाती है।

विभिन्न हिंदू जातियों के ब्याह – शादियों और दूसरे रीति दिवालियों धर्म पर आधारित होते हुए भी कुछ विभिन्नता रखते हैं बल्कि यह कहा जा सकता है कि कुछ पुराने रीति – दिवालि गामूली परिवर्तन के साथ इन के दैनिक जीवन में अब भी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में शैव शक्ति, ब्रह्म, विष्णु, महेश इत्यादि की पूजा की जाती है। यहां के देवी-देवताओं की पूजा एक जीवनी जागती संस्था है। इस लिए उनके दैनिक जीवन में साकार मन्त्रों का विशेष महत्व है। मन्त्रों के प्रबंध के लिए स्थानीय समाज द्वारा कार्य करते हैं जिन्हें कहीं कहीं जीवन कहीं बजीर या भण्डारी कहते हैं। वह खानदानी भी होते हैं। चुने भी जाते हैं प्रत्येक ग्रामीण देवी – देवता के पास अपनी – अपनी चल अचल सम्पत्ति होती है और इस के अतिरिक्त चढ़ावा भी चढ़ता है।
खानपान -

हिमाचल के अन्य क्षेत्रों की भाति शिमला क्षेत्र में भी खान - पान का यथावत समन्वय दिखाई मिलता है। इस क्षेत्र में चावल, गेहूं, और मक्का का उत्पादन होने के कारण लोगों का आहार चावल दाल गेहूं, तथा मक्का के आटे से बनी रोटियाँ, दालों में विशेष रूप से उड़द, राजमास, मसूर, चावल, मुंगी, रोटी व सुखाये हुए मटर इस्तेमाल करते हैं। इस के अतिरिक्त सब्जियों में आलू, मटर, गोभी, घिया, तीरे इत्यादि प्रयोग की जाती है। विशेष त्योहारों आदि के अवसरों पर विशेष प्रकार के पकवान जैसे पुटाण्डे, चिलड़े, मदरा, भले, बटू पर उपलब्ध रहते हैं।

व्योमवृद्ध लोगों से पता चलता है कि इस क्षेत्र के लोग कावण, कावणी, मक्की के सत्तु बड़े चाव से खाते हैं। वर्षभर समय में कुछ वृद्ध लोगों को छोड़ कर अन्य लोगों में इस भोजन के प्रति कोई विशेष रुचि नहीं पाई जाती। उपरोक्त शिमला के लोग अधिक मांसाहारी हैं जो इस बात को प्रतीत होता है कि सर्दियों प्रारंभ होने से पहले भूषण नामक उत्सव शुरू करते हुए एक घर में कई बर्तन तथा सब्जियों काटे जाते हैं तथा उन्हें फकद कर रखा जाता है और सर्दियों में उन का मास खाते हैं। वहाँ के लोग विशेष त्योहारों, उत्सवों में मदिरा का सेवन अवश्य करते हैं। मगर हुए के शोक में बिना तड़की हुई दाल, फ़ुलके व चावल खाये जाते हैं।

गांव की दाल में नमक मिर्च के अलावा कोई भी मसाला नहीं डाला जाता। इस के अतिरिक्त मकर संक्रान्ति को खिचड़ी बनाने की परम्परा है।
धर्म -

जिला शिमला में सभी धर्मों के लोग रहते हैं। हिमाचल प्रदेश शहर: हिन्दू धर्मावलम्बी
लोग बसते हैं। अन्य धर्म अवलोकनों में बौद्ध, इसाई, सिख और मुस्लिम गिने जा सकते हैं।
शिमला में अन्य लोगों का आगमन बहुत पहले हुआ। इसलिए शिमला में पुराने गिरजाघर आज
भी मिलते हैं। मुस्लिम तथा सिख लोगों के लिए मस्जिद तथा गुरुद्वारा का निर्माण किया गया
है। शिमला जिला में बहुत से ऐतिहासिक मन्दिर भी हैं।

वेशभूषा -

हिमालयों की भाषा बहुरंगी तथा आधुनिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। शिमला क्षेत्र की
वेशभूषा में गोदम के अनुसार अन्तर पाया जाता है। ऊपरी पहाड़ों पर रहने वाले लोग प्रायः
ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। जिन में बन्द गले का लम्बा कोट, सदियों तथा चित्त पर
किशोरों व लड़कियों अथवा गर्म बुझारी टोपी। गर्म पायजामा पहना जाता है। महिलाएं, सलवार,
कमीज, सदियों और साथ में लाल या पीला ढांचे पहनती हैं। शिमला के निचले क्षेत्रों में जहाँ
ढाँड कम पड़ती है वहां सूती व हल्के कपड़े का प्रयोग किया जाता है, क्योंकि परिवर्तन
प्रकृति का शास्त्र नियम है। इस लिए समय परिवर्तन के साथ शिमला जनपद के लोगों के
पहरावे अथवा वेश भूषा में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। समय के बदलाव के कारण तथा
बदलते हुए वैज्ञान के अनुसार लोग कपड़े पहनते है। अधिकांश अन्तर, नये, सूट इत्यादि
का प्रयोग होने लगा है।
आभूषण -

पुरातत्त्व समय में यहां की स्त्रियों वहूँ आभूषण पहनना पसन्द करती थी जैसे लोग, मुर्की, चक्कालिया, बालू, बालिया, कोका, चन्द्रहार, बंगी, गजर, विलप, देवी, अंगूठी, आंशर, पाजेब इत्यादि। ये आभूषण अपनी सामर्थ्यनुसार चांदी व सोने के बनाये जाते थे। यदापि आज इन आभूषणों का नियमित प्रयोग कम हो चुका है तथापि आज भी स्त्रियों के हाथ, कान, नाक गले में आधुनिक आभूषण देखे जा सकते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -

शिमला जनपद की लोक परम्परा और इतिहास उतना ही पुराना है जितनी पुरानी मानव सभ्यता। पौराणिक काल से जुड़ी अनेक परम्पराओं एवं स्थान आज भी जीवित है। पाण्डवों से जुड़ा शिमला के हादेश्वरी और नाटकोटी, भीम से जुड़ा भीमकोट इत्यादि अनेक पुराणस्थल है, जो अपने प्राचीन इतिहास का संकेत देते हैं।

पौराणिक अध्ययनों से पता चलता है कि यहां के कुछ क्षेत्रों पर दानवों का आधिपत्य रहा है शिमला जनपद के उपरी क्षेत्र में आज भी बलि प्रथा एवं भूंडा, शांत आदि दानवों, यज्ञों की परम्परा चली आ रही है।

प्रारंभिक काल में जब भी मानव सभ्यता ने पनपने का प्रयास किया तो निशाचर सभ्यता उन पर हारी होती रही। इस से मुक्ति पाने की इच्छा से मनुष्य जाति ने देवी देवताओं
की पूजा अर्चना की, जिस के प्रमाण आज भी विद्यमान है।

वेदों से पूर्व अजात काल में मानव इतिहास के आधार पर भी शिक्षा जनपद के प्रारंभिक काल की अनुमान मिलती है।

“स्वयं वेद के अनुसार आयों के आगमन से पहले यहां वोल, किरात, किन्नर, यक्ष, नाग इत्यादि का निवास था लोग अपनी सुरक्षा के लिए पत्थर के किले बना कर रहते थे।”

रियासती काल –

“हिमाचल छोटी 2 रियासतों में बंटी था जिसमें परम्परावादी एक की बंज का शासक होता था। शासक व शासित में सामान्यवादी सम्बन्ध होता था। परन्तु कभी-कभी जनता राजा अथवा शासक से अप्रसन्न हो कर सत्याग्रह भी कर देती थी। 1857 ई। के स्वतंत्रता संग्राम की गूंज इन पहाड़ों में भी गुजरी। 16 मई 1857 में जलोग का सेना कॉम्प्लेक्स प्रिंटेड की आग में जल उठा। इस दुखदी में अधिकतर पहाड़ी राजपूत तथा गोरखा सैनिक थे। रामपुर बुशाहर के राजा शामशेर सिंह ने अपने सभी सम्मान ब्रिटिश शासकों को लौटा दिये और उन से कोई भी सहारा तेजसे उन्हें इन्फार कर दिया था। अभिज्ञों की विद्वंद्व बहावत करने के जुर्ग में अनेक लोगों की आजीवन कारावास की सजा दी गई थी।”

1. देवराज ग्राम्य, हिमाचल प्रदेश एक ग्रंथक, पृं ६ १०
2. मेघवर पाथक, हिमालय समाज संस्कृति इतिहास तथा पर्यावरण पर संदर्भित पृं६ 243
“शिमला जिला की पहाड़ी रियासतों के पोलिटिकल ऐजेंट तथा शिमला जिला के हिंदी कमीशनर विलियम हैय ने बुशाहर के राजा के विरुद्ध सेना भेजने का निर्णय लिया था परन्तु सैनिक टूकड़ी उपलब्ध न होने के कारण वह कोई कार्यशाही न कर सका।”

प्रारम्भिक काल के बाद शिमला जनपद के रियासती काल का अवलोकन करना भी आवश्यक है क्योंकि महाभारत काल के उपरान्त कुछ काल ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त अर्थता एवं साहित्यकारों के लिए आज भी अन्येषण का काल बना हुआ है। फिर भी इतिहासकारों को जो कुछ सामग्री उपलब्ध हुई है उसी की आधार पर यह कहा गया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले जिस प्रकार भारतवर्ष अनेक रियासतों और ठहराइयों में विभक्त हो उसी प्रकार शिमला जनपद में भी कई रियासतें एवं ठहराइयाँ थी। जिन के भेल से स्वतंत्रता के बाद महासू के नाम से जाना जाता रहा। विशाल हिमाचल प्रदेश बनने के बाद यह जिला शिमला के नाम से जाना जाता है।

“19 वीं सदी के आरम्भ में शिमला अस्तित्व में आया अंग्रेजों ने उस की स्थापना 1819 ई. में की थी। राजनैतिक अधिकार नेता कन्हेड़ ने सब से पहला भवन कन्हेड़ कोटेज बनवाया था उस के बाद इसी तरह लाल छतों वाले सुन्दर भवन का निर्माण होने लगा। जिन में से गार्डन कैसल, रेलवे-ब्रोड, स्टेट बैंक इण्डिया, वायसराय लॉज भवन, जनरल पोस्ट ओफिस आदि आज भी शिमला का ऐतिहासिक महत्व बनाये हुए है।”

1. Mamoranda on Indian States, 1930 Calcutta Page No. 319
2. मिया गोयर्ग सिंह, हिमाचल प्रदेश इतिहास संक्लीपति और अर्थव्यवस्था पृ० -155
(2) लोक परम्परा तथा ताल वाच

यह कहना बहुत ही कठिन है कि शिमला जनपद के लोक वादों का प्रचलन कब और कैसे हुआ? शिमला क्षेत्र के इतिहास का अवलोकन करने पर ऐसा कोई भी उल्लेख नहीं मिलता। इस लिए यही कहा जा सकता है कि शिमला जनपद के लोक वादों का उद्भव यहाँ की धार्मिक मान्यताओं से सम्बंध है। शिमला क्षेत्र में अवनंद, सुपिर और घन वादों का ही प्रचार है।

ताल वादों की श्रेणी में ठोल, नगारे, ठोलक, टमीक और डमकु इत्यादि आते हैं। अवनंद वादों का सम्बन्ध धार्मिक आस्थाओं के अनुसार महादेव, शिव तथा गणेश से जोड़ा जाता है।

धार्मिक कार्यों से सम्बन्धित गीतों में प्रयुक्त होने वाले ताल-

शिमला जिला का समूचा क्षेत्र किसी न किसी रूप में देवी – देवताओं से जुड़ा रहता है। इस जनपद में लोगों की देवी – देवताओं पर आगाध श्रद्धा और विश्वास है। परिणामस्वरूप यहां के छोटे पारिवारिक झगड़ों से लेकर प्रकृतिक प्रकृतियों के समाधान हेतु लोगों को देवी – देवताओं द्वारा लिए गए निर्णय मान्य रहते हैं।

इस जनपद में हर देवता का एक विशेष व्यक्ति होता है जिसे मूर या दीवां कहते हैं। जब किसी देवस्थान में या निजी घर में देवोत्सव होता है तो देवता के कारदार इकट्ठे हो कर देवता का आहवान करते हैं। उस समय दीवां को मधय में बिठाया जाता है।
गूर में देवता केवल वाद्यों की मंगलमयी ध्वनि के बीच ही प्रवेश करता है। वह लोगों
की समस्यायें सुनता है और समाधान के उपाय भी बताता है।

भविष्यगत प्राकृतिक प्रकारण इत्यादि को बारे में तथा फसलों, धन धान्य के बारे में भी
दीवां अपनी विशेष स्थिति में अपनी देवता प्रदत्त शक्ति द्वारा सही सही भविष्यवाणी करता है
ताकि समय रहते उन समस्याओं का उपचार समाधान किया जा सकेंगे शहनाई, ढोल, नगार,
नरसिंहा, थाली, घंटा, शंख आदि प्रमुख वाद्य रहते है। वाद्यों पर ‘हिंग्राओण’ ताल बजाई
जाती है।

देवी—देवताओं की हिंग्राओण ताल

पहाड़ी मन्दिरों में किसी खास समय जब देवताओं का समागम होता है तो अनेक लोग
वहां इकट्ठे होते हैं तथा देवताओं के समक्ष पुजारी जो कि दीवां कहलाते है उन के समक्ष
अपनी समस्याओं, बीमारी तथा कोई भूल चूक आदि की समस्या रखते हैं तथा दीवें उन सभी
के उत्तर देता है। परंतु दीवां को उस स्थिति में लाने के लिए पहले ढोल, नगार द्वारा हिंग्राओण
ताल बजाई जाती है। जिस से दीवां अपने में ना रह कर किसी दूसरे संसार में पहुंच जाता है
वह सभी के प्रश्नों के उत्तर देता है।

इस ताल का ही प्रभाव है जो उस दीवां को उस स्थिति में पहुंच देता है। हिंग्राओण
ताल में आठ मात्राएं होती है जिस को बोल इस प्रकार है—

173286
\[\text{U. P. University Library}
\[\text{Chinna}]

हिंद्राओण ताल

मात्रा - 8

“आं, तां, तां घड़ा, आं, तां, गें, नां

दूसरा प्रकार - दूरलय में

मात्रा - 4

आं, तां, घें, नां”।

भक्ति गीतों में प्रयुक्त होने वाली तालें-

धार्मिक पहाड़ी गानों तथा दूसरे गानों के साथ लय बाढ़ों द्वारा जिन तालों का प्रयोग किया जाता है वह भक्ति ताल कहे जाते हैं। भक्ति ताल में आठ मात्राएं होती हैं जिस के बोल इस प्रकार है -

भक्ति ताल

मात्रा - 8

“आं, गल, गन, तां, तां पढ़, गन, आं,

1. दयाल चन्द्र से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
दूसरा प्रकार

मात्रा - 6

ज्ञान ज्ञान, तांत्र ताण ज्ञान ज्ञान

तीसरा प्रकार

मात्रा - 6

ज्ञात्रिकिड़, ज्ञाता, तातां, तात्रिकिड़, ज्ञातिक, ज्ञेनात्रिकिड़।

संस्कारों से सम्बंधित गीतों में बजाई जाने वाली तालें

जन्म संस्कार -

जब शिशु पैदा होता है तब गांव पड़ोस की महिलाओं को इकट्ठा किया जाता है और ये महिलाएं मिल कर जन्म संस्कार को गीत गाती है। शिशु के माता पिता को बधाई दी जाती है तथा शिशु और उसकी माता की दीर्घीयु की कामना की जाती है। इस के अंतरिक्त शिशु के अन्य सम्बन्धी घटना जैसे बुआ, ताई, चाची, मामी, ताऊ, चाँचा, मामा को भी गीतों के माध्यम से बधाई दी जाती है। जन्म संस्कार पर गाये जाने वाले बधाई गीतों को स्थानीय भाषा में 'भ्याई' कहते हैं। अतः इसे भ्याई उत्सव के नाम से भी जाना जाता है।

1. दयाल चन्द्र से साशाक्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
होम संस्कार या गुन्तराला-

जब शिशु ग्यारह या तेरह दिन का हो जाता है तब उस दिन माता पिता व शिशु की साथ लेकर गांव के पहिले बार घर में आकर कहते हैं “जिसे स्थानीय शामिला में गुन्तराला कहा जाता है। इस अवसर पर आस-पड़ोस की महिलाएं और अन्य समस्त नवजात शिशु को देखने तथा उसके जन्म की बधाई देने आते हैं। साथ ही शहनाई, रणसींगा, कलाल, टोल नगरा आदि वाद्यों द्वारा मंगलध्वनि की जाती है।

नामकरण-

यह संस्कार जन्म से तीसरे अथवा पांचवे महीने में होता है। इस दिन आंगन को लीपा - पोता जाता है। गोबर के साथ घर के समीप अर्धगोलाकार रेखा दी जाती है जिस के मध्य ने गोबर का पिण्ड रखा जाता है और उस पिण्ड पर दुबरू रखी जाती है। बालक को नहला धुला कर मामा को द्वारा लाये हुए नये कपड़े पहनाये जाते हैं। माता शिशु को गोद में लेकर द्वार की पूजा करती है। इस के बाद पुष्पित बालक का नाम बताता है तथा उस के मुख पर अन्न लगाता है।

यज्ञोपवीत या जनेऊ ढालना–

स्थानीय भाषा में इसे ‘बधारण’ भी कहते हैं शिमला जनपद में यज्ञोपवीत की प्रथा सामान्यतः बाहुण परिवारों में है। अगर पहले जनेऊ न ढाला गया हो तो विवाह वाले दिन यह संस्कार किया जाता है।
गुण्डन संस्कार- 

यह संस्कार प्रायः बालक के जन्म के तीसरे या पांचवे वर्ष में किया जाता है इसे स्थानीय भाषा में जड़ोलन कहा जाता है। पुरोहित से मुहूर्त निकाल कर गुण्डन ग्राम मन्दिर या तीर्थ स्थान में किया जाता है। इस संस्कार के एक दिन पहले सम्बन्धों आते हैं। मामा, बुआ, बहन का उपस्थित होना आवश्यक समझा जाता है। मन्दिर जाते समय शाहनाई बालक मंगलध्वनि करता है। मन्दिर में पहुंचने पर पुरोहित द्वारा हवन का समस्त प्रबन्ध किया जाता है।

तत्पश्चात बाल अर्थात जदू बाटने की तैयारी होती है। इन संस्कारों पर ‘बधाई’ ताल बजाई जाती है।

बधाई ताल- 

जन्म संस्कार के समय, होम संस्कार, नामकरण, यजोपवीत व गुण्डन संस्कार के समय बधाई ताल को बजाया जाता है। ये ताल शुभ अवसर में प्रारम्भ में बजाई जाती है। बधाई ताल में 28 मात्राएं होती हैं। जिसके बोल इस प्रकार है-
बधाई ताल
मात्रा - 28

"ज्ञानाणि ज्ञाणिं ताणिनां तात्रिकिंडः
तां 5 5 त्रिकिंडः नाताणि ताणिना
ताणिना नात्रिकिङ्ग नाताणि ताणिना
ताणिना ताणि नात्रिकिङ्ग नाताणि
ताणि ताणि नात्रिकिङ्ग नाताणि
ज्ञानि नात्रिकिङ्ग त्रिकिङ्ग तां 5 ण"}

किसी भी शुभ अवसर के समय कराल ताल को भी बजाया जा सकता है। जो कि आठ मात्रा और सोलह मात्राओं की होती है। जिन के बोल इस प्रकार हैं-

कराल ताल
मात्रा - 8

"ज्ञान ज्ञान ज्ञागे ताण
tाण ज्ञागे नाध त्रिकिङ्ग"

1. द्वालकन्द से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
कराल ताल

मात्रा - 16

ज्ञान ज्ञान ज्ञान ताण ताण ज्ञान नज्ञा घड़ान

ताण ताण ज्ञान ताण ताण ज्ञान नज्ञा घड़ान”।

अशुभ अवसर पर बजाई जाने वाली ताल -

मृत्यु संस्कार -

जीवन की यात्रा मृत्यु के साथ थम जाती है। मृत्यु अत्यावश्यक अंतःस्तिति संस्कार जीवन रूप
नीका सजाने संचारने के लिए अन्तिम संस्कार होते है। सामान्यतः मृत्यु होने पर गीत गाने का
यहाँ कोई प्रचलन नहीं है परन्तु कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा अनेक विधि विधानों का यहां प्रयोग
होता रहा है। अर्थात् क्रमशः ले जाते समय ठोल - नज़ारों पर उल्टा बाजा बजाने का रिवाज
है। मृत्यु संस्कार को समय बड़हस ताल बजाई जाती है।

बड़हस ताल

मृत्यु संस्कार को समय बड़हस ताल का प्रयोग मृत्यु के समय बहुत पहले होता था
परन्तु अब इस ताल का कोई प्रयोग नहीं होता। बड़हस ताल में पांच मात्राएं होती है। जिस
के बोल इस प्रकार है -

1. रामचरितमण्डल से सामान्यतः द्वारा प्राप्त जानकारी
बड़हसं ताल

मात्रा - 5

“झाँढ तांढ ५५ तांढ ५५”

विवाह संस्कार के समय बजाई जाने वाली ताले

तेल उबटन संस्कार -

विवाह के अवसर पर सर्वप्रथम पड़ित द्वारा शुभ दिन एवं मुहूर्त निकाला जाता है।

रंग - रंगाई संस्कार और शाति पूजन के बाद तेल उबटन संस्कार किया जाता है। यह तेल हल्दी व आटे का एक मिला जुला मिश्रण होता है। विवाह से पांच या सात दिन पहले तथा तेल बटणा संस्कार प्रारंभ होता है।

तेल का अर्थ है कि नहाने से पूर्व बर - चधू को देवी स्थापना के मण्डप के सामने बिठाया जाता है। जहाँ पर महिलाएं बर अथवा चधू के शरीर एवं मुख पर उबटन लगाती है और साथ ही एक पात्र में सरसों का तेल लिया जाता है जिसे तुब विशेष प्रकार के घास के साथ पांच या सात बार सिर की मांग पर लगाया जाता है। माता - पिता सभी सम्बन्धी आदि इस तेल को तुब के साथ लगाते हैं। तत्पश्चात बर - चधू को नहलाया जाता है, तथा देवी पूजा

__________________________

1 ट्यालचन्द्र से साधारण द्वारा प्राप्त जानकारी
मेहदी तथा सेहरा बन्दी-

प्राय: मेहदी वर वांछ दोनों को लगाई जाती है। यह संस्कार विवाह की पूर्व संध्या से प्रारंभ हो जाता है। महिलाओं द्वारा हाथ- पाँव में मेहदी लगाई जाती है सेहरा बन्दी संस्कार पर पुरोहित द्वारा मंत्र उच्चारण के बाद वर को नये सुन्दर व चमकीले वस्त्र पहनानें जाते हैं।
जिन में गुलाबी रंग के लघुठे के वस्त्र का चूड़ीदार पाजाम तथा कुर्ता और गोटेदार चमकीले अंचलन या शेरवानी पहनाई जाती है। इस के बाद वर के सिर पर पहि�пит द्वारा गुलाबी रंग की पोशाक बांधी जाती है जिस के उपर संग - सम्बन्धियों के कर कमलों से छूटे हुये सेहरे को पुरोहित वर के मस्तक पर बांधता है। इस संस्कार को 'सेहरा बन्दी संस्कार' कहते हैं। इस संस्कार पर विशेष लोक ताल लोक वादकों द्वारा विभिन्न परण, तुकड़ों, सहित ढोल, नगारे पर शहनाई की धुन के साथ बजाते हैं।

विवाह के अवसर पर ये कुछ खास संस्कार होते हैं जैसे तेल उबटन, मेहदी, व सेहरा बन्दी बारात चलने को समय, मुकलावा, अन्दरेड़ा, पानी पनिहार संस्कार आदि इन अवसरों पर विभिन्न तालों का प्रयोग किया जाता है। तेल उबटन व मेहदी व सेहरा बन्दी संस्कार के अवसर पर मंडुआ ताल बजाई जाती है। मंडुआ ताल में सात मात्राएं होती है तथा जिस के बोल इस प्रकार है-
बारात चलने के समय ताल

"श्रां तांस तांस तांस तांस तांस शां तांस नाद" ²

जब बारात वधू पक्ष के गांव में पहुंचती है तो गांव के किसी एक घर में बारात को ठहराने का प्रबंध किया जाता है। बारात जब दुल्हन के घर के नजदीक पहुंचती है तो तूरी लोग जंग ताल बजाते है जिस से घर बालों को मातृभूमि हो जाने की बारात पहुंचने वाली है और वे बारातियों के स्वागत का प्रबन्ध कर सके।

1. ड्यालचन्द से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
2. ........................वही ...........................
जंग ताल की विशेषता

जंग ताल को सुंदरी के अवसर पर कभी भी बजाया जा सकता है। बारात चलते समय रास्ते में कई जगह जंग ताल को बजाया जाता है। इस ताल के बोल शुरू में मध्य त्यों में चलते हैं फिर आहिस्ता - आहिस्ता दृढ़ त्यों तक चले जाते हैं। बाजारी लोग जब ये ताल बजाते हैं तो लोग बहुत आनन्द अनुभव करते हैं तथा बाजारों को पैसे भी देते हैं। इस ताल की विशेषता है कि यदि कोई अन्जान व्यक्ति भी जब इस ताल को सुन ले तो वह भी झूम उठेगा। जंग ताल में 8 मात्राएं होती हैं। जिसे के बोल इस प्रकार हैं-

जंग ताल

मात्रा - 8

“धैन ईधे नई झांड तल पेट नाड तांड

जंग में डांगे का प्रयोग भी हो जाता है

एक ही नगरे पर धाम में वाले किनारे पर जब एक ही बायण के से बजाया जाता है तो उसे डांगा कहते हैं। डांगे में एक ही बोल की समान ल्यों में बजाया जाता है। डांगे के बोल इस प्रकार हैं।—
ढंगा

घें गंता घें गंता घें गंता घें गंता

दूसर लय में-

धांड़ झाड़ा धांड़ झाड़ा।

मुकलावा संस्कार

वर- वधू के लग्न पटकों में गांठ बांध कर अभिन के चारों ओर अभिन को साधी मान कर फेरे लिए जाते हैं। जिसे लग्न संस्कार कहते हैं तत्पश्चात समय आता है विदाई संस्कार का,जब दुर्लभ की बेली विदा करते हैं ते कुछ दूर तक दुर्लभ को बेली में नहीं विदाया जाता। उस के भारी वधू को स्वयं उठा कर ले जाते हैं और कुछ दूर ले जा कर उसे बेली में विदाया जाता है। बेली में विदा कर वधू को माता-पिता द्वारा दूध में घी, शककर, व भात मिला कर खिलाया जाता है। विदाई का दूध बहुत ही हजार विदायक होता है। विदाई के समय मुकलावा ताल बजाई जाती है । मुकलावा ताल में तेरह मात्राएं होती है जिस के बोल इस प्रकार है-

1. प्रवालचन्द्र से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
युक्ताता ताल

मात्रा - 13

“तड़ां वनत डाँन तान खेमे नास
धिन धिन झांस त्रिकिंड़ धिं तथे
नास”।

अन्दरेहः संस्कार -

बारात जब घर को घर पहुंचती है तो घर की माता घर - वधू की आरती उतारती है। वर - वधू के आगमन पर उन्हें प्रवेश द्वार पर खड़ा किया जाता है जिसे तोरन कहते हैं। घर की माता आरती उतारती है फिर घर - वधू को घर के अन्दर ले जाया जाता है। इसे अन्दरेहः या वधू प्रवेश संस्कार कहा जाता है।

इस संस्कार के समय अन्दरेहः ताल बजाई जाती है। अन्दरेहः ताल में चौथ मात्राएं होती हैं। जिस के बोल इस प्रकार है -

अन्दरेहः ताल

मात्रा - 14

“तणान त्रिकिंड़ तणान त्रिकिंड़ तणान दीयी नास
धिन धिन झांस त्रिकिंड़ धिं ताधि नास”।

1. श्यालयन्द्र से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।
2. ..................इही.........................
पानी - पनिहार संस्कार

अन्दरेता संस्कार के बाद पानी पनिहार संस्कार होता है। इस दिन को ‘बेझी धाम’ का
dिन भी कहते हैं। इस दिन अधिकतर मिट्र व सम्बन्धियों को भोजन करने के लिए आमन्त्रित
किया जाता है। पानी पनिहार संस्कार के लिए वर – वधू को ठोल, नगारे, शहनाई, करनाल
व रणसिंगा के साथ गांव के पानी के उस ब्रोत के पास ले जाया जाता है जहां से पर के
लोग प्रतिदिन पानी भर कर लाते हैं। दुल्हन के सिर पर दो लोटे बिनुए के उपर रखे जाते हैं।
तेल मेल संस्कार के समय प्रयोग किए जाने वाले वस्त्र को महिलाओं द्वारा पकड़ा जाता है। इस वस्त्र
dे नीचे चलाने हुए वर – वधू को पानी के पास ले जाया जाता है। इस वस्त्र अथवा गुलाबी
चांद्र को ‘जमाणा’ कहते हैं। महिलाएं गीत गाते हुए पानी के पास पहुंचती है फिर पहिले
द्वारा जल पूजन करवाया जाता है। इस के बाद दोनों लोटे पानी से भर कर वधू के सिर पर
रख दिये जाते हैं। उन्हें ले कर वधू वर के व अन्य लोगों सहित वापस घर पहुंचती है जहां पर
आंगन में या शाति पूजन के मण्डप में सभी सगे सम्बन्धियों को हाथ पर पानी डाल कर फिलाती
है। इस पानी - पनिहार संस्कार कहा जाता है। पानी पनिहार के समय चार मात्रा की ताल
बजाई जाती है जिस के बोल इस प्रकार है -

पानी पनिहार ताल

मात्रा - 4

“पैथन तालता पैथन झा झा”।

1 द्वालध्वन्द से साक्षात्कार द्वारा पानी जानकारी
नौबत

नौबत को दोल नगरे तथा अन्य लोक चायों द्वारा प्रात: सांप बजाया जाता है

नौबत

मात्रा - 10

“आंठ निकिड़ आंस आंस नास
तांस निकिड़ आंस आंस नास”

दूसरा प्रकार

मात्रा - 10

आंठ निकिड़ तांस तांस तांस
tांस निकिड़ आंघे नाझा निकिड़

tीसरा प्रकार

मात्रा - 12

आंठ निकिड़ आंस निकिड़ आंघे नाणि
tांस निकिड़ तांस निकिड़ आंघे नाणि”1

1 प्रयालचन्द्र से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
चरतु तथा त्योहारों के समय गीतों में प्रयुक्त होने वाले ताल-

महीने के अवसर पर-

हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में भी महीना बजाने की प्रथा है। निचले महासुब्री क्षेत्रों में आज भी इस का प्रचलन है। तूरी जाति के लोगों द्वारा महीना समाप्त होने के अगले प्रथम दिन जिसे 'साजी' कहा जाता है उस दिन प्रातः काल में टॉलिया (टोल वादक) पर घर जा कर टोल बजा कर महीना शुरू होने की सूचना देता है। बदले में लोग पैसे या कुछ अनाज देते हैं इस अवसर पर महीना ताल बजाई जाती है।

महीना ताल

पढ़ाँग तेव्रा

मात्रा - 7

घेण जाणा घेण जाणा ताण ताण नामे।

गुरगा पूजा के अवसर पर बजाई जाने वाली तालें-

गुरगा गाथा-

हिमाचल प्रदेश में नाथ व सिद्ध सम्प्रदाय के आगमन से गुरगा देवता को यहां के लोक जीवन में मान्यता मिली। मूल रूप से गुरगा का उद्गम स्थान राजस्थान माना जाता है। गुरगा देवता की कथा हिमाचल में अलग-अलग रूपांतरों से गाई या सुनाई जाती है।

1. द्वारकश्य द साधारण द्वारा प्राप्त जानकारी
“माहू देश के राजा की पत्नी बाँछल नि-संतान थी। उस ने गुरु गोरखनाथ की भविष्य की ओर गुरु हार दिए गए फल खाने से गुरमा का जन्म हुआ। गुरमा जन्म से ही चमत्कारी बालक था। उस की शक्तिशाली देख कर पातालपुरी के नाग ने उसे मारना चाहा। गुरमा ने बालुकी नाग को हरा कर उस का संहार करना उचित समझा, लेकिन नाग ने उस की दासता स्वीकार कर ली और भविष्य में गुरमा की सहायता करने का वचन दिया। गुरमा होने पर उसी बालुकी नाग की सहायता से गुरमा का विवाह माता की पुत्री सुरिल्ल से हुआ। शादी के बाद कुछ समय तक गुरमा अपने सदुराल में ही रहा। उस की अनुपस्थिति में मंगलोत्तर ने माहू देश पर हमला कर दिया। गुरमा की बहुन गुमाड़ी ने अपने भाई को पत्र लिख सारी स्थिति से अवगत कराया। बहुन का पत्र मिलते ही गुरमा वाहक देश लौट आया और उस ने बहुत से कुछ जीते। बाद में उस ने अपने भोसरे भाइयों अर्जुन और शुजुन का वचन किया।

गुरमा द्वारा अपने ही भाइयों की हत्या करने के कारण उस की मां बाँछल धोखी हुई। उस ने गुस्से में आ लगा गुम्मो को शाप दे दिया। गुर्मा धरती में समाना चाहते थे लेकिन धरती मां ने केवल मुसलमानों को दूसरे हक है, कह कर उसे गोद में नहीं समाया। विवाह गुरमा मुसलिम धर्म ग्रहण कर अपनी नीती घोड़ी सहित भूमि में विलुप्त हो गये।

सुरिल्ल अपने पति के वियोग में तड़के लगी। विजय की सहायतासे सुरिल्ल को पुनः अपने पति के दर्शन होने लगे। गुरमा की मां को इस बात का पता चल गया। वह भी अपने पुत्र से मिले ने वाले के लिए व्यक्तित्व होने लगी। गुरमा के पुनर्मिलन का किस्सा चाहे ओर फैल गया। अन्ततः गुरमा को पुनः धरती में समाना पड़ा। बाद में गुरमा नाग देखता के रूप में पूजा जाने लगा।”

1. डॉ॰ गीतम शर्मा, व्यक्तित्व, पढ़ा दे अत्यंत, पृ॰ १०९-१०।
लोक कथा गुगा में हिमाचल की धार्मिक मान्यताओं का सुन्दर वर्णन हुआ है। गुगा कथा में नाथ सम्रादेय के साथ सुलिम धर्म, हिन्दू धर्म का समन्वय मिलता है।

हिमाचल प्रदेश के विभिन्न भागों में गुगा जहरपीर की लोक देवता के रूप में पूजा अर्चना की जाती है। यहां के जनमानस में गुगा के प्रति अगाध श्रद्धा एवं विश्वास है। यहां गुगा, जहरपीर, गुगा पीर, गुगामल चौहान, गुगा राणा आदि कई नामों से पूजा जाता है।

गुगा पूजा -

मूल रूप से गुगा का उदगम स्थान राजस्थान माना जाता है। शिमला से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर भूमिगत स्थान धार्मिक में गुगा देवता का गागेड़ी मन्दिर है। जहां पर गुगा नवमी के दिन प्रतिवर्ष गांव- गांव से गुगा की छड़िया लेकर विभिन्न मण्डलियों एकत्रित होती है, इस अवसर पर डाँड़ वादन के साथ गुगा गाथा का गायन किया जाता है। इस के अतिरिक्त लोक वाद्य, ढोल, नगार, शहनाई आदि का प्रदर्शन किया जाता है।

गुगे की गाथा घर- घर में जा कर डाँड़के के साथ लोक गायक गाते हैं गांव के श्रद्धालु लोग गुगे की पूजा हेतु आता, चावल, ची, धूप पैसे इत्यादि ढालते हैं। गुगा पूजा घर पर आठ मात्र की ताल बजाई जाती है।

गुगा ताल

हिमाचल में गुगा पूजा का बड़ा महत्व है लोग दूर - 2 से जहां जहां नाग मन्दिर है आते है
तथा गुगा पूजा करते हैं कुछ लोग गुगा पूजा के समय टोलियों में घूमते हैं तथा डमरू पर लय ताल का प्रदर्शन करते हैं।

गुगा ताल

मात्रा - ८

"तांग तांगी तांग तांगी तड़ा उग चेदे नाड"।

डमरू पर -

पहला प्रकार

मात्रा - ६

डिम कहि मक डिम कहि मक

दूसरा प्रकार

मात्रा - ८

तंग डंगुं तंग डंगुं डंगुं डंगुं डंगुं डंगुं डंगुं "।

1 द्यालचन्द से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
खेतों में काम करते समय बजाई जाने वाली ताल

श्रम गीत-

शिमला जनपद के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। अतः यहां पर लोग जब कोई कार्य मिलजुल कर करते हैं तो बादकों का एक समूह बुलाया जाता है यह बादक मण्डली श्रमिक समूह को अपने चादन को प्रभाव से उत्साहित करती है। ऐसा शर्म अवसर गुड़ई, कटाई, जुताई का होता है। जहां नगरा, ढोल, करनाल तथा शहनाई का प्रयोग वृद्ध चादन के रूप में होता है। इस अवसर पर बादक गुड़ई ताल बजाते हैं।

गुडाई ताल

शिमला में फसल की गुडाई के समय जिस ताल को बजाया जाता है उसे गुडाई ताल के नाम से जाना जाता है। गुडाई के समय वाजगी बुलाये जाते हैं। लोग गुडाई करते हैं तथा वह गुडाई ताल बजाते हैं इस प्रकार काम भी जल्दी हो जाता है तथा थकावट भी महसूस नहीं होती है। गुडाई ताल में आठ मात्रा होती है जिस के बोल इस प्रकार है-

गुडाई ताल

मात्रा - 8

पहला प्रकार

शांना घेरा, शांना घेरा, शांना घेरा, शांना घेरा, शांना घेरा
दूसरा प्रकार - दूसरा पता में

मात्रा - 8

“झांजणा पेना ताण ताण
झाणिन गिधड़ झाणिन गिधड़”।

नृत्य सम्बन्धी तालें

गिद्धा अभ्यास भुहुआँ

यह नृत्य शिमला का अत्यधिक प्रचलित नृत्य है। शिमला क्षेत्र में इस नृत्य को ‘भुहुआँ’ नृत्य कह कर भी पुकारते है। इस का प्रदर्शन विभिन्न संस्कार उत्सवों जैसे विवाह, जन्म, मुख्ता आदि पर और विभिन्न त्योहारों व देव त्योहारों पर किया जाता है।

इस नृत्य में महिलाओं की एक जैसी वेदांिणा नहीं होती अपितु अपनी इच्छानुसार सज–धज कर विभिन्न प्रकार के आभूषणों से अंतर्क्रम हो कर शुभ अवसरों पर गिद्धा करती है।

पहाड़ी बोली में महिलाएं विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाती है जिन्हें भुहुआँ, गिद्धा गीत तथा बोलियों आदि नामों से जाना जाता है। यह नृत्य अधिकतर कहरवा तालों में ही होते

1 द्विलक्ष्मी के साथांत्कार द्वारा ग्राह स्थानकारी
है। इस नृत्य को साथ दोलक दोलकी तथा चिमटा बायों का प्रयोग मुख्य रूप से होता है। गिि्रा

नृत्य में बजाई जाने वाली ताल के बोल इस प्रकार है-

गिि्रा-

दोलक में-

धिन धाती धिन धड़ि

दोल में- भाषा- 8

तां शधे पेना चेवे नास गेस तां त्रिकिंड”।

नाटी

शिमला जिला में सब से लोकप्रिय नृत्य ‘नाटी’ है। यहां नाटी को स्थानीय भाषा में

‘माला’ भी कहते हैं। नाटी शब्द नट अथवा नटी से बना है जिस का सम्बन्ध नाटय से है।

शिमला क्षेत्र में नाटी नृत्य शैली अधिक प्रचलित है। नाटी नृत्य विभिन्न अवसरों पर किया

जाता है जैसे वियाह जन्म, मुण्डन संपर्क आदि। इस के अतिरिक्त मेले व त्योहारों पर भी यह

नृत्य किया जाता है।

“नाटी लोकगीत है, लोकवाच, एवम् नृत्य शैली भी है। नाटी गीतों की रचना विशेष

कर नृत्य करने के लिए ही लिये है, यदि यह कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।”

नाटी गीतों के साथ नाटी ताल की ही प्रयोग किया जाता है।

1. रायलफ्लाइट से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
नाटी में प्रायः प्रेम प्रसंग, सामाजिक घटना या किसी व्यक्ति विशेष की जीवन गाथा इत्यादि का वर्णन दृष्टिव्यतिक प्राप्त होता है। शिमला जनपद में सब से प्राचीन नाटी ठीक नाटी के नाम से जानी जाती है। ठीक नाटी लोक नृत्य में लोक वातावरण के रूप में लय और ताल के बजाये जाता है और उसी धुन के अनुकूल नृत्य गीत गाये जाते हैं। इस नृत्य में प्रायः पुरुष-हिमकी भाग लेते हैं।

नर्तक दल के आरम्भ में नाचने लगे वाले को धूर का नर्तक कहते हैं। उसी के अनुसार श्रेष्ठ नर्तक नाचते हैं। नाटी में स्त्री-पुरुष सामूहिक रूप से एक-दूसरे का हाथ पकड़कर विभिन्न प्रकार से पांव को एक-दूसरे के साथ मिलाते हुए भाव-भगिनी शाही नाटी नामक लोकनृत्य करते हैं। नाटी में प्रायः संगीत, ठोला, नगछा, ठोलक शहनाई और नरसिंहा आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। नाटी लोक नृत्य में नाटी ताल का प्रयोग किया जाता है।

नाटी ताल

शिमला में नाटी का अच्छा रिवाज है। शादी-विवाह के अवसर पर लोग नाटी नृत्य द्वारा हर्षेख्द शादी को प्रकट करते हैं। शिमला में विभिन्न प्रकार की नाटियों का रिवाज है। इन सभी में पिन्न-2 प्रकार की तालों का प्रयोग किया जाता है। नाटी ताल में आठ मात्राएं होती हैं। जिस के बोल इस प्रकार हैं -
नाटी ताल

मात्रा - 8

पहला प्रकार

"ताज गंधे घेना नागे घेना नागे तां त्रिकंढ"

दूसरा प्रकार

मात्रा - 8

पिंड डता पिंड तक पिंड तक डिना त्रिकंढ

सेवगी

मात्रा - 8

तासणता \( \frac{2}{2} \) पणता \( \frac{2}{2} \) पणता ताजिक़-डिक़ड़

"श्रिष्ठ झाणता घेत्यना समांस" ।

ऐतिहासिक माथाएँ

बरलाज -

शिमला क्षेत्र में बरलाज नृत्य देव - स्तुति में प्रयुक्त होता है। यह नृत्य अधिकतर देव

\[1 \text{ भाषातिथि से साहित्यकार द्वारा प्राप्त जानकारी} \]
मन्दिरों में ही होता है। जिस प्रकार भड़ूआं अथवा गिद्धा नृत्य केवल महिला नृत्य माना जाता है उसी प्रकार बरलाज एक पुरुष प्रथान नृत्य है।

शिमला क्षेत्र में प्रमुखतः काल्पिक मास में दीपावली त्योहार के आस-पास शीत ऋतु में बरलाज का आयोजन किया जाता है। कुछ विद्वानों ने बरलाज शब्द का संधि-विच्छेद बर अर्थात वरदान और लाज अर्थात आत्म सम्मान या गौरव हनन से होने वाली लाज से रक्षा करते हुए बरलाज को आत्मगौरव की श्री वृद्धि का वरदान बताया है।

श्री एम. आर. ठाकुर के अनुसार “बरलाज का अर्थ इच्छा की पुर्ति के लिए वर (फल) मांगना और लाज रखने के लिए प्रार्थना करना है।” यह लोक नृत्य लोक रामायण पर आधारित है।

इस नृत्य को राम-सीता की गाथा को गाते हुए करते हैं। बरलाज नामक देव-नृत्य देवताओं को साक्षी मान कर परम्परागत तरीकों से किया जाता है। देव मन्दिर के प्रांगण में अभिन्न प्रज्वलित की जाती है। इस अभिन्न के चारों ओर घूमते हुए पुरुष नर्तक इस नृत्य को करते हैं।

पुरुष हाथ में छड़ी लेकर, ढोल शहनाई तथा करनाल लोक वाद्यों के साथ बरलाज नामक लोक नृत्य को करते हैं। इस नृत्य के साथ एक विशेष ताल छुकड़ा ताल बजाया जाता है।

---------------------
1 एम. आर. ठाकुर, हिमाचल प्रदेश के लोक नाटक एवं लोकानुरुजन पृ 62
इस उत्सव पर लोग सुबह शाम देवता का पूजन करते हैं और रात्रि को बरलाज नृत्य के साथ देवता का पूजन करते हैं विभिन्न गांव के लोग इस समय एकत्रित हो कर बरलाज नामक देव-उत्सव मनाते है। बरलाज देव नृत्य जो सदियों से चला आ रहा है आज भी अपना पूर्ण अस्तित्व बनाये हुए है। प्रातः काल यह नृत्य देव प्रकट चेले द्वारा किया जाता है जिन्हें दीवार कहते हैं। देवता के दीवे लोगों को गेहूँ के दाने देते हैं। इन दानों को सत्वाज़ कहते हैं, जिन्हें वे अपने पास या अपने घर में बड़ी श्रद्धा से रखते हैं। इस प्रकार शिमला क्षेत्र में बरलाज नृत्य का आज भी महत्व माना जाता है। गांव की महिलाएं व पुरुष स्थानीय वेदांतवाद में सज-धज कर बरजल के देव-प्रहोर का आनन्द उठाते हैं। बरलाज देव नृत्य में छुकड़ा ताल बजाई जाती है।

बरलाज सदियों में ही मनाया जाता है। इस में लोग हाथ में झटे लेकर गोल दायरे में नृत्य करते हैं और पहाड़ी भाषा में सामान्य हनुमान का वर्णन किया जाता है। बरलाज लोक नृत्य में बजाई जाने वाली छुकड़ा ताल में 12 मात्राएं होती है जिसके बोल इस प्रकार है—

छुकड़ा ताल

मात्रा - 12

“ झांस नण झांस तांस तांस तांस
tांस त्रिकिङ झांस तक धिना उण”

1. द्वारापलन से साहसिक द्वारा प्राप्त जानकारी
बरलाज का रथयोला

मात्रा - 8

झांझणा झांझणा झांझणा
झांझणा झांझणा झांझणा
झांझणा

लोक नाटक में प्रयुक्त होने वाले ताल

करियाला-

करियाला शिमला व अन्य जिलों का लोकप्रिय लोक नाटक है। हिमाचल प्रदेश में प्रचलित अन्य लोक नाटकों की अपेक्षा करियाला अपेक्षाकृत अधिक क्षेत्र में लोकप्रिय है।

करियाला का आयोजन विशेषकर शांति अवसर में अशिवन भाव के नवरत्नों से आरम्भ होता है। करियाला का वास्तविक समय दीपावली से आरम्भ होता है। पहाड़ी बोली में करेल का अर्थ कुरेडना होता है।

करियाला शब्द की उत्पत्ति व्युत्पत्ति स्थानीय शब्दों करेल (कुरेडना या कुरेडन) कर्माल (कचनार जाति का एक वृक्ष विशेष (कुरल (पक्षी विशेष) और संस्कृति 'कृ' धातु से जोड़ने के प्रयत्न किए हैं। कराल शब्द संस्कृत साहित्य में अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। भयानक, तलवार, ढावाना, बड़े - 2 दांतों बाला इस के सामान्य अर्थ है।

1. दयालप्रस ने साखरकार द्वारा प्राप्त जानकारी
करियाला के लिए किसी विशेष मंच की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रकृति के खुले प्रांगण में प्रायः रात्रि के समय ही खेला जाता है। करियाला एक ऐसा लोक नाट्य है जिस का हर जगह शिमला में सदियों के मौसम में खास तौर पर प्रदर्शन किया जाता है। रात्रि में लोग खाना-पीना कर के एक खुले स्थान पर इकट्ठे होते हैं। खूब आग जलायी जाती है जिसे ‘ध्याना’ कहा जाता है। इस के दौरान गिर्द लोग बैठ जाते हैं वहीं पर करियाला करने वाले भी आते हैं और अपने प्रदर्शन द्वारा लोगों को मन्त्र मुद्ग करते हैं।

करियाले का शुभारम्भ दर्शकों का स्वागत, शुभ कामना वन्दना आदि से किया जाता है। सब से पहले चन्द्रवली आती है इस में पुष्प कलाकार ही महिला बत्रा धारण कर के नृत्य करता है। चन्द्रवली अर्थात चन्द्रवली मंच पर आती है। मंच पर आते ही वह सब से पहले वायनों को छूती है तथा वायुकारों एवं दर्शकों के ऊपर जलते धूप का पात्र घुमा कर कामकाज का शुभारम्भ करती है। तत्पश्चात कई प्रकार के स्वाग आते हैं। करियाले में जो दृश्य प्रस्तुत किए जाते हैं उन्हें स्वाग बहा जाता है। जैसे साधु का स्वाग, अग्रि का स्वाग, ब्रह्म का स्वाग इत्यादि। करियाला में डोल, शाहनाई, करनाल, नगारा आदि वाद्य यंत्र बजाये जाते हैं। करियाला प्रस्तुत करने वालों की संख्या 12 - 15 के आस - पास होती है।

शिमला जनपद में देवता को मनाने के लिए करियाला करवाया जाता है। किसी व्यक्ति के घर में पुजोत्सव, किसी ग्रामीण बीमारी से मुक्ति मिलने पर अर्थात कोई भी मनोरथ पूर्ण होने पर जिस ने देवता के पास करियाला करवाने का वचन दिया हो उसे अपने निवास स्थान पर करियाला करवाना पड़ता है।
मनोरंजक दृष्टि के अनुसार-खुशी के शुभ अवसरों पर जैसे विवाह आदि में करियाला मनोरंजन हेतु करवाया जाता है। करियाला लोक नाटय पर प्रकाश डालते हुए ओंघंड हांडा ने लिखा है- “करियाला, लोक नाटय हिमाल में लोक जीवन की अंतरंग शान्ति को इन्द्रध्नुश नृत्य रंगों में प्रस्तुत करता है।” लोक नाटय में टूटी- फूटी हिंदी व पहाड़ी बोली का प्रयोग किया जाता है जो व्यंग्य से भरपूर होती है। करियाला लेखन नाटय से करियाला ताल का प्रयोग किया जाता है।

करियाला ताल

करियाला में किसी विशेष समस्या को लेकर भी व्यंग्य रूप में प्रदर्शन किया जाता है। इस समय प्रारंभ में एक विशेष ताल बजती है जिसे करियाला ताल कहा जाता है। जिसमें 14 तात्त्वां होती है और जिस के बाद इस प्रकार है-

करियाला ताल

तात्त्वां - 14

“तात्त्वां तात्त्विकः चेहा खड़ेखां त्रिकिरिकः
चेहां ज्ञात्तिकिरिकः ज्ञापेना ज्ञात्तिकिरिकः ज्ञान
णां चेहा नात्त्वें तात्त्वेये नणाकिट”2

1. हिमाचल का लोकनाटय करियाला, लेख दोमसी वर्ष 9 अंक (1)
2. द्वारका पट्टि से साशक्तकर्तर द्वारा प्राप्त जानकारी
खेलों में प्रयुक्त होने वाले ताल

छिंज-

छिंज हिमालय का एक बड़ा लोगों का पसंद किया जाने वाला खेल है जिसे स्थानीय भाषा में कुश्ती भी कहा जाता है। इसे सभी लोग बड़े आनन्दपूर्वक देखते हैं। मंगलामुखियों द्वारा दोल बजाकर कुश्ती का प्रदर्शन किया जाता है। सर्वप्रथम अरवाड़ा पूजन किया जाता है। पहलवानों में उत्साह का संयोजन करता है, जो कि प्राचीन समय में बुद्ध अवसर पर वाघों के प्रयोग का एक अंश आज भी इसी रूप में ऐसा माना जा सकता है।

छिंज में दो वाघों का विशेष प्रयोग होता है। एक बड़े नगरों की तरह होता है जिसे टमक कहा जाता है उस का प्रयोग कुश्ती के प्रारम्भ में ही किया जाता है।

टमक-

टमक को बीच में रखा जाता है जिसे कुश्ती के प्रारम्भ में बजाया जाता है। फिर कुश्ती का महान बड़ा मनोरंजक हो जाता है। टमक को कोई भी बजा सकता है। टमक एक बड़े नगरों के रूप में होता है और धाम की दीली आवाज इस से निकलती है। आदमी दो लकड़ी के दंडों से इसे बजाते हैं। टमक में बजाई जाने वाली ताल के बोल इस प्रकार हैः
टमक में - छिंज

ताल बरोजी

“झिन नास झास झिन नास झास”

इसी बोल को बार-बार बजाते हैं।

टमक के बाद कुश्ती में ढोल का प्रयोग किया जाता है। जो कि पूरी कुश्ती के समय बजता रहता है इस से ये पता चलता है कि कहां कुश्ती हो रही है तथा आरवाड़े में पहलवानों को भी जोश आ जाता है। कई पहलवान जिन्होंने कुश्ती छोड़ी हुई होती है वह भी ढोल को आवाज सुन कर लड़ने के तैयार हो जाते हैं। ढोल में बजाई जाने वाली ताल के बोल इस प्रकार है-

ढोल में-

“ढिंढ ढांस ढांस ढिंढ ढांस ढांस

दूसरा प्रकार

मात्रा - 4

किंड़जिना किंड़जिना किंड़जिना किंड़जिना।

1. दयालपंड्य से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी
ढोड़ नृत्य-

पहाड़ी में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि-

“पीपली रा मसाला ठोडा रा खेल”

जैसे मिर्च का स्वाद मुंग जला कर भी विशिष्ट रहता है और मिर्च मसाले के बिना वाल सब्ज़ी स्वादिष्ट बनती ही नहीं है तथा बहुत लोगों को उपर से अलग मिर्च खा कर भी जीभ जलाए बिना खाने में स्वाद नहीं आता उसी तरह ठोड़ा में तीर की मार खा कर ही इस खेल का आनंद दुगुना चौगुना होता है और यह खेल देखने वालों के लिए भी उतना ही मनोरंजक होता है जितना मार खाने और मारने वालों के लिए ओजोपात्रक।

जिला शिमला में ‘ठड्यार’ नामक एक त्योहार होता है। यह त्योहार ग्रीष्म ऋतु में मनाया जाता है यहां के विभिन्न स्थानों पर ठड्यार नामक त्योहार का आयोजन किया जाता है। इसे ठोड़े का खेल कह कर भी पुकारा जाता है। यह एक विचित्र प्रकार का लोक नृत्य है।

ठोड़ा धनुर्विधा का मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है। इस का नामकरण इस खेल में प्रयुक्त तीर के काठ मनोरंजक खेल है।
कौरवों की संख्या सी नहीं साठ थी। इस लिए उन्हें शाखा कहते हैं। पाण्डव पांच ही ये उनके वंशज पाठा या पाशा कहताऐ हैं।

दोनों दल डोंगे गड़सों, धनुष बाण और तलवारों से लैस होते हैं। दोनों ओर से पहले वाक्युद्ध होता है। दोनों एक दूसरे को ललकारते हैं। जिस खुले मैदान में खेल हो रहा होता है उस की परिक्रमा करते हैं। बाद में बाद-विवाद आरम्भ होता है। ये बाद-विवाद जहां एक ओर साहस, शौर्य और बीता से भरा होता है वहीं दूसरी ओर हात्य और व्यंग का उत्कृष्ट वातावरण पैदा होता है।

तत्पश्चात धनुष युद्ध शुरू होता है। तीर केवल प्रतिद्वंद्वी को ही भारा जाता है। किसी तीसरे को नहीं। कलाकार पैरों में बड़े जूते तथा घुटनों से टखनों तक अनेक तहों के पाजामों पहने होते हैं। तीर केवल घुटने से मीठे- 2 लगना चाहिए। यदि शरीर के अन्य भाग में तीर लग गया तो वह अनाड़ी कहलाता है और ऐसी स्थिति में वास्तविक लड़ाई भी हो सकती है।

प्रारम्भ में यह नृत्य केवल एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है। नर्तक हाथ में धनुष व तेज लकड़ी के तीर लेकर नृत्य करते हैं। एक ओर नर्तक नृत्य करता रहता है। तथा दूसरी ओर भेदत से व्यक्ति कमान पर तीर चढ़ाकर नृत्य करते रहतें हैं। और उस व्यक्ति की टांग पर तीर मारने का प्रयत्न करते हैं। नर्तक कलाकार नृत्य करते हुए भी तीर को टांग पर लगाने से बचाता रहता है।

वास्तविक हार तब होती है जब टांगों से खून निकल कर पाजामों से बाहर दिखाई दे।
यह नृत्य ढोल, नगारा, शहनाई तथा करनाल आदि बाळों के साथ होता है।

जब तीर कमान का खेल समाप्त होता है तब सबसे तीर कमानधारी व्यक्ति हाथों में तीर कमान लेकर ढोल के ताल तथा शहनाई की धुन पर नृत्य करते हैं इस नृत्य के साथ ही यह त्योहार समाप्त होता है। यह त्योहार ‘नौरवी ढाली का खेल’ त्योहार के अवसर पर किया जाता है।

तीर को पहाड़ी भाषा में ठोड़ा कहा जाता है। तीर के आगे वाले भाग को जो लकड़ी का ही होता है उसे शरी कहा जाता है।

ठोड़ा नृत्य में ठोड़ा ताल को बजाया जाता है जिस में आठ मात्राएं होती है। इस के बोल इस प्रकार है—

पहला प्रकार

मात्रा- 8

“शांता तांता तांता तांता तांता तांता गेड़ दीड़”

दूसरा प्रकार

मात्रा- 8

“शांता तांता तांता तांता तांता तांता तांता गेड़ी”

1. व्यालपाठ से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी।
जिला शिमला के लोक संगीत में प्रयुक्त की जाने वाली प्रमुख तालें-

बधाई ताल

मात्रा - 28

झानाणी झाणिञ्ञा  ताणिना  ताणिकिंड़
ताणिना  ताणिकिंड़  ताणिना  ताणिना
ताणिना  ताणिकिंड़  ताणिना  ताणिना
ताणिना  ताणिकिंड़  ताणिना  ताणिना
ताणिना  ताणिना  ताणिकिंड़  ताणिकिंड़
झानिन  झाणिकिंड़  झाणिकिंड़  झाणिकिंड़

करियाला ताल

मात्रा - 4

ताणिना  ताणिकिंड़  झें  कढेझां  झाणिकिंड़
झेतां  झाणिकिंड़  झाघेना  झाणिकिंड़  झांसन
णझां  झेंजना  लाघेघे  नणकिट
मंडुआ ताल

मात्रा - 7

ताण त्रिकंड़ ताण त्रिकंड़ तड़ान दीघी नास

बारात चलने के समय

मात्रा - 8

झांझ लंस लंस लंस लंस लंस लंस झांझ नास

जंग ताल

मात्रा - 8

घेन ईघे नई झांझ 5त घेड नास लंस

झंगा

घेड घाटा घेड घाटा घेड घाटा घेड घाटा

हुत लय में -

धांझ झाझ धांझ झाझ
मुकलांवा ताल

मात्रा - 13

तडां अनत डान तान घेघ नां घिन

घिन जां स त्रिकिंड़ घिन तद्धे नां

अन्दरेहा ताल

मात्रा - 14

तणान त्रिकिंड़ तणान त्रिकिंड़ तणान दीगी नां

घिन घिन जां त्रिकिंड़ घिन ताधि नां

पानी पनिहार

मात्रा - 4

पेणन तांता पेणन जां जां

देवताल आवाहन

मात्रा - 8

जां तां तां तां घडां जां नां घेघे नां
पूजा ताल

मात्रा - 8

चेस नाना तांग चेना तांग चेना चेघे नाना

विसर्जन ताल

मात्रा - 4

झानण झांतणी झांतणी झानणा

हिंगाओणताल

मात्रा - 8

झं तां तां घंझं झं तां झं चेघे नां

दूसरा प्रकार - दुतलय में

मात्रा - 4

झं तां चेघे नां
भक्ति ताल

मात्रा - 8

झांझ णत णन तांत तांत णपण णन झांझ

दूसरा प्रकार

मात्रा - 6

झाणन झांझ तांत ताणन झांझ झांझ

तीसरा प्रकार

मात्रा - 6

झाण्टिकिंड झांतां तांतां ताण्टिकिंड झाण्टिकिंड झाण्टिकिंड

बरलाज

छुकड़ा ताल

मात्रा - 12

झांझ नण झांझ तांत तांत तांत

तांत त्रिकिंड झांझ तक धिनात ण
बरलाज का रघयोला

मात्रा – 8

झांण्णा झांण्णा तांझाणा झांण्णा

झांण्णा झांस्ताणा तांझाणा झांण्णा

नौबत

मात्रा – 10

झां स त्रिकिड़ झां स झां नास

तां स त्रिकिड़ झां स झां नास

दूसरा प्रकार

मात्रा – 10

झां स त्रिकिड़ तां स तां स तां स

तां स त्रिकिड़ झां स नास त्रिकिड़
तीसरा प्रकार

मात्रा - 12

झांझ त्रिकिंड़ झांझ त्रिकिंड़ झांझे नाणी

तांट त्रिकिंड़ तांट त्रिकिंड़ झांझे नाणी

महीना ताल

पहाड़ी तेवरा

मात्रा - 7

घेण झाझा घेण झाझा ताण ताण नागे

गुढ़ड़ाई ताल

मात्रा - 8

पहला प्रकार

झांझा घेना झांझा घेना झांझा घेना झांझा घेना
दूसरा प्रकार - दून लय में

मात्रा - 8

झांज़ा चेना ताण ताण
झगि गिध़ड़ा झगि गिध़ड़ा

गुंगा पूजा

मात्रा - 8

तां तांगी तां तांगी तां ग घेये नास

डमुळ पर पहला प्रकार

मात्रा - 6

दिम कड़ि मक दिम कड़ि मक

दूसरा प्रकार

मात्रा - 8

तं डंड़ं तं तं डंड़ं डंड़ं डंड़ं डंड़ं
नाटी ताल

मात्रा - 8

तां पंढे घेना नागे घेना नागे तां त्रिकळळ

दूसरा प्रकार

मात्रा - 8

घिंस ुता घिंड़ तक घिंड़ तक घिना त्रिकळळ

सेवणी

मात्रा - 8

तांणता ५५णता ५५णता तात्रिकळळळळळळ

झिंकन झाणता घेतना ५ ज्ञां ५

गिद्दा

मात्रा - 4

ढोलक में -

घिन धाती घिन धड़ि
ढोल में-

तां णघे चेना चेने नास गेड़ तांड त्रिकंड़

कराल ताल

भाषा - 16

झाण झाण झाण ताण ताण झाणे नझा घड़न

ताण ताण झाण ताण ताण झाणे नझा घड़न

कराल ताल

भाषा - 8

झाण झाण झाणे ताण

ताण झाणे नझा त्रिकंड़

छिंज

ताल बरोजी

टमक में-

झिं नास झास झिं नास झास
दोल का बोल -

दिंद आं या दिंद आं या

दूसरा प्रकार

किड़जिना किड़जिना किड़जिना किड़जिना

ठोड़ा ताल

मात्रा - ४

आं तां तां तां तां तां तां गें दें

दूसरा प्रकार

मात्रा - ४

आंता तां तां तां तां त्रिकिंड़

तां तां तां तां तां गेंदी

अशुभ (मृत्यु) बह्संस ताल

मात्रा - ५

आं तां ५५ तां ५५